मेरी जन्मभूमि : मेरा गाँव

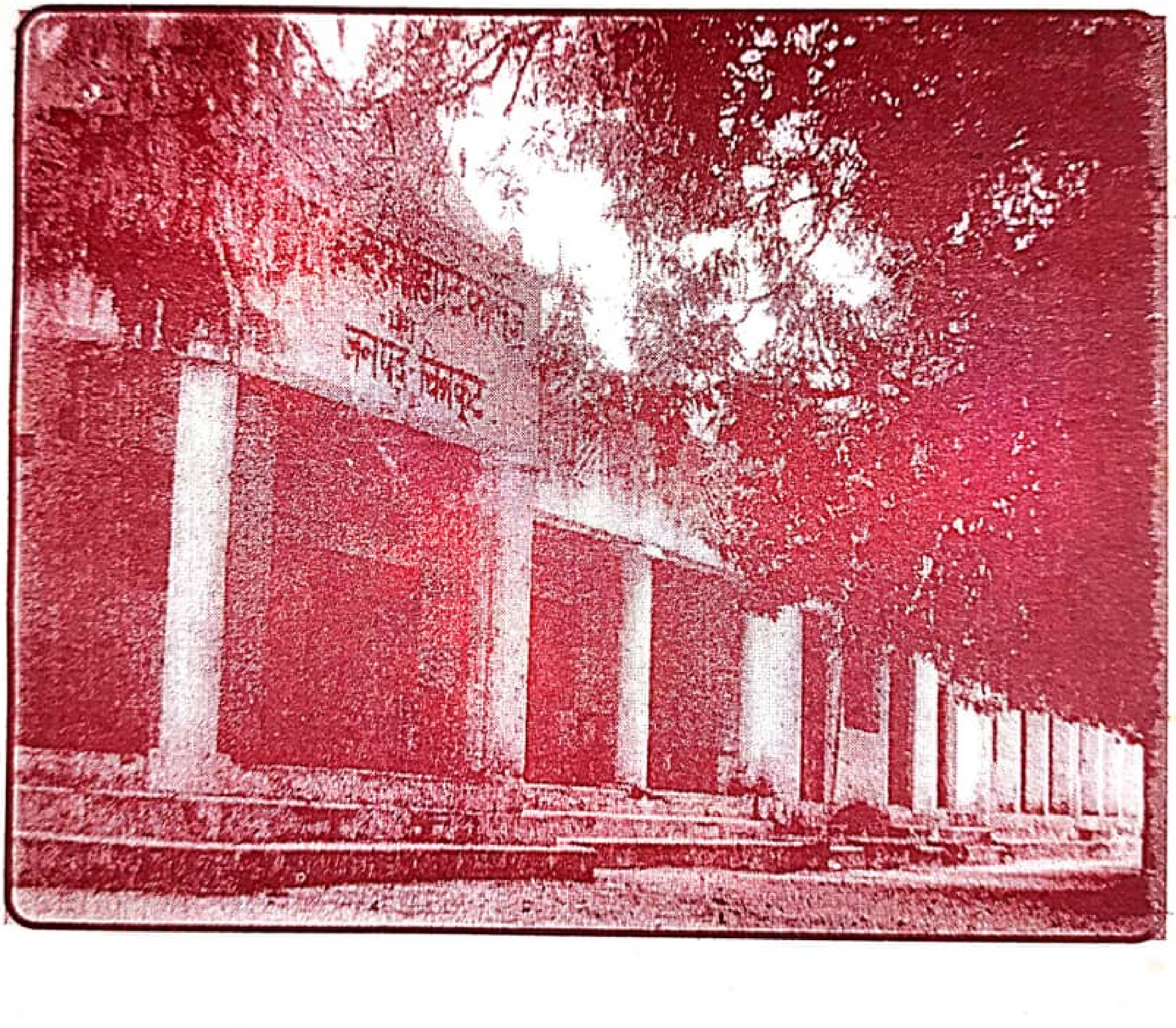

-: लेखक :-

डॉ गंगा प्रसाद बरसैंया

DO No. 3422/DG/01

MRS. KOMAL ANAND, I.A.S.
Tel. No. : 301 3574
Fax No. : 301 9487

प्रत्नकीर्तिमपावृणु
महानिदेशक
DIRECTOR GENERAL
AND
अपर सचिव
भारत सरकार
ADDITIONAL SECRETARY
TO THE GOVT. OF INDIA

भारत सरकार
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
जनपथ, नई दिल्ली - 110 011
GOVERNMENT OF INDIA
ARCHAEOLOGICAL SURVEY OF INDIA
ARCHAEOLOGICAL SURVEY OF INDIA
JANPATH, NEW DELHI-110011

15th May, 2001

Dear Dr. Mishra,

I am writing this to send you herewith a copy of the letter received from Dr. Ganga Prasad Barsainya, Principal (Rtd.) reagarding discovery of some rock paintings in village - Bhounri, District - Chitrakoot. Dr. Barsainya has informed that due to quarrying lot of paintings have already been damaged. In case immediate steps are not taken the entire evidence will be lost. I would like you to depute a technical officer to immediately inspect the site and submit a report. In case these are of some significance the District Collector may be approached to stop quarrying activities in the area where the rock paintings are located.

With regards.

Yours sincerely

(KOMAL ANAND)

Dr. P.K. Mishra,
Superintending Archaeologist,
Archaeological Survey of India,
Bhopal Circle, Bhopal

Copy to -

1. Dr. Ganga Prasad Barsainya, 12-MIG, Chaube Colony, Chhatarpur M.P. with reference to his letter dated 5th May, 2001
2. Director (Ant.) for information and necessary action.

(KOMAL ANAND)

मेरी जन्मभूमि : मेरा गाँव

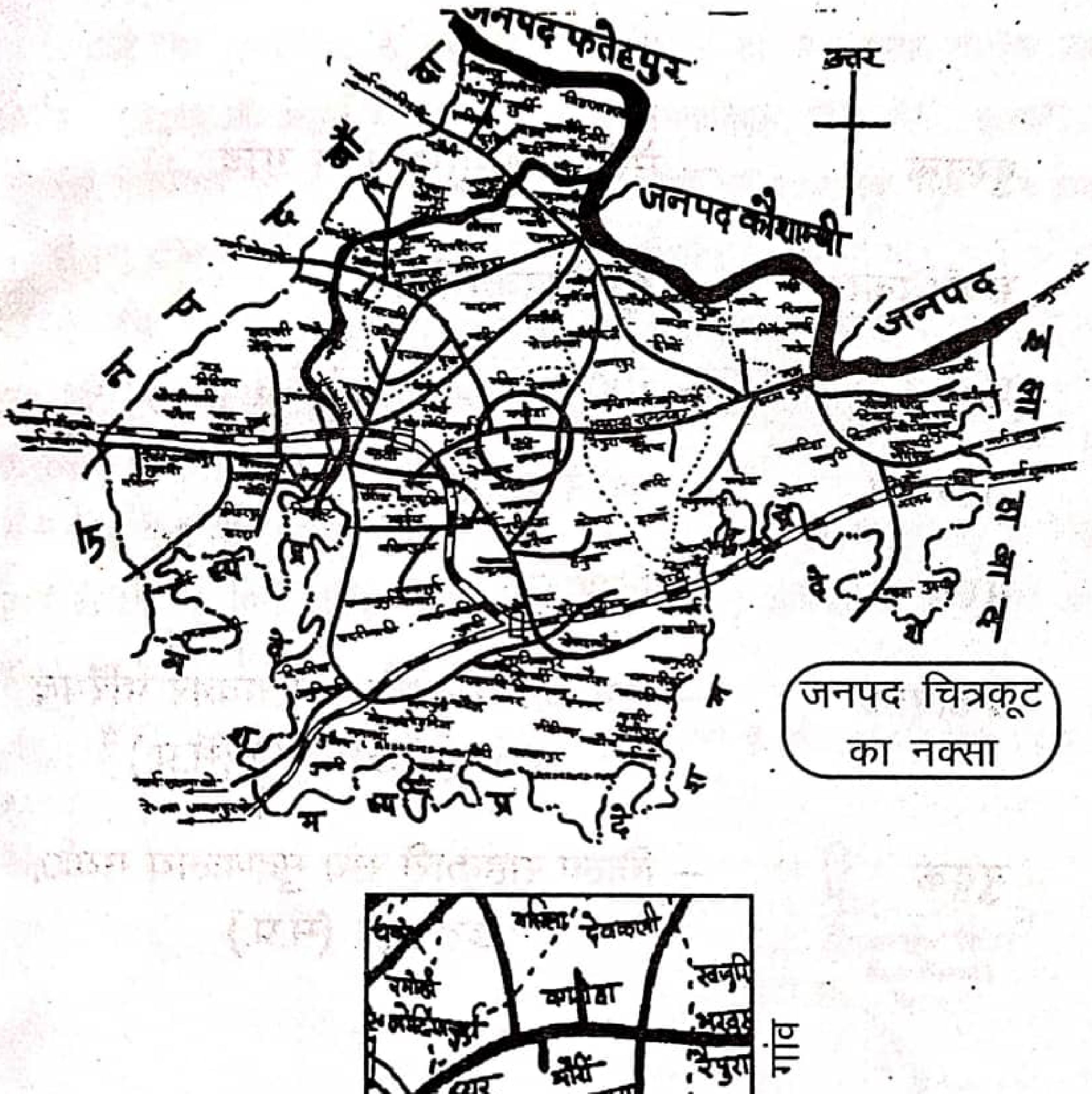

जनपद चित्रकूट
का नक्सा

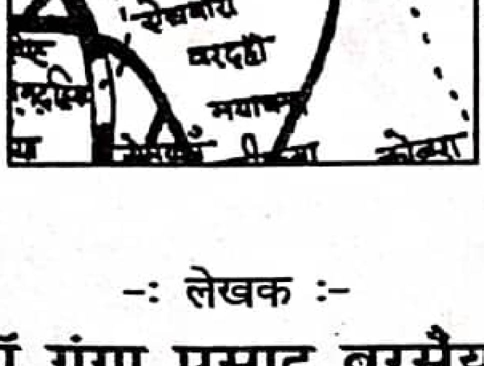

भौंरी गाँव

-: लेखक :-

डॉ गंगा प्रसाद बरसैया

पुस्तक — मेरी जन्मभूमि—मेरा गांव

सर्वाधिकार — © लेखकाधीन

प्रतियां — 100

संस्करण — प्रथम 2002

मूल्य — निःशुल्क

प्रकाशक — म.प्र. आंचलिक साहित्यकार परिषद इकाई—छतरपुर (म.प्र.)

मुद्रक — जिला सहकारी संघ मुद्रणालय मर्या0, छतरपुर (म.प्र.)

संदेश

मैने चित्रकूट जनपद के ग्राम भौरी के संबंध में डॉ. गंगा प्रसाद बरसैंया द्वारा लिखित पुस्तिका का अवलोकन किया। ग्राम के पुरातात्विक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, प्राकृतिक सहित अनेक विषयों पर डॉ. बरसैयां का शोधात्मक कार्य और तथ्यों को प्रकाश में लाने का कार्य सराहनीय है। प्रत्येक व्यक्ति का अपनी जन्म भूमि के प्रति दायित्व होता है और मातृभूमि से बाहर चले गये व्यक्ति द्वारा अपनी जन्म स्थली की ओर रुचि बनाये रखना उचित एवं आवश्यक है। इससे वह जन्मभूमि के ऋण से मुक्त हो सकेगा। बाहर गये व्यक्ति द्वारा जन्मभूमि के प्रति रुचि रखने एवं प्रयत्नशील होने मात्र से विकास में पर्याप्त सहयोग मिल सकता है। ऐसी पुस्तकें यदि हर गांव के बारे में लिखी जायें तो क्षेत्र का समग्र इतिहास तैयार होगा जो अपेक्षाकृत अधिकारिक और आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शक होगा।

मैं डॉ. बरसैंया के इस प्रयास की सराहना करता हूँ और अपनी शुभ कामनायें देता हूँ।

(जगन्नाथ सिंह)
जिलाधिकारी,
चित्रकूट।

विनम्र निवेदन -

ग्राम भौंरी मेरी जन्मभूमि ही नहीं, पूर्वजों की जन्मस्थली भी है। मेरे पूर्वज इस गांव में कब और कहाँ से आये, कुछ पता नहीं। अलबत्ता पुराने परिजन कहते चले आ रहे हैं कि उनके पूर्वजों ने जरिया (छोटी कंटीली झाड़ियाँ) काटकर अपना घर बनाया था। जो भी हो, गाँव के उसी कच्चे घर में मेरा तथा मेरे भाई—बहनों का जन्म हुआ। बड़े होने पर हम उस कमरे को बड़ी उत्सुकता से देखा करते थे जहाँ हमारा जन्म हुआ था। इसी गाँव में हम खेले—कूदे, बड़े हुये। अनुकूल—प्रतिकूल सभी प्रकार के दिन देखे। मेरी माँ (जिसे हम दीदी कहते थे) ने यदि साहस और पराक्रम से काम न लिया होता तो मैं आज यहाँ तक न पहुँचता। उसने माता—पिता दोनों का दायित्व निभाया। परिश्रम, साहस, संघर्ष और मर्यादा का अनुपम उदाहरण थीं हमारी माँ। मेरे बड़े भाई श्री अनन्तराम जी ने भी बड़ा संघर्ष किया था। माँ की गोद और इस मातृभूमि का आँचल ही मेरी बाल्यावस्था की क्रीड़ा स्थली थी। गोली—कंचा, गिल्ली—डंडा, छुवा—छुवौवल कबड्डी (हुडुरुवा) इन्हीं गली—खोरों में खेले हैं। यहाँ के हार—पहाड़ों, नालों—तालाबों, फलों—फसलों का आनन्द लिया है। तब हम लोगों का कोई भविष्य नहीं था।

भाग्य बड़ा प्रबल होता है। ईश्वरीय प्रेरणा से गाँव में मिडिल स्कूल का शुभारम्भ हुआ और मेरा तथा मेरे जैसे सैकड़ों—हजारों युवकों के भविष्य का द्वार खुला। प्राइमरी स्कूल के कच्चे—खपरैल के कमरों में पढ़कर एक—एक कक्षा पार करते आठवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की और उस परीक्षा में प्राप्त प्रथम श्रेणी ने मुझे चित्रकूट इंटर कालेज कर्वी (जनपद चित्रकूट) में पहुंचा दिया। कर्वी की पुरानी बस्ती का वह कमरा अभी भी याद है जिसमें मैं श्री शंकरलाल गौतम और विजय बहादुर भार्गव के साथ रहकर कर्वी में पढ़ता था। यह कमरा श्री शंकर लाल जी के मामा जी का था। हम तीनों स्वयं पकाते—खाते थे। पवित्र पयस्वनी नदी में रोज सुबह स्नान करते थे। इंटर के बाद जबलपुर विश्वविद्यालय से बी.ए., एम.ए. और पी.एच—डी. किया। पढ़ाई के साथ नौकरी की। फिर पहले प्राइवेट कॉलेज में और बाद में सरकारी कॉलेज में प्राध्यापक बना और अंतत: शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य पद से सेवा निवृत्त हुआ। साहित्य संबंधी बीसों ग्रंथ प्रकाशित हुए। मेरे कई सहपाठी मित्र गांव तक ही सीमित रह गये और कई साथी देश के अन्य स्थानों पर पहुँच गये।

मातृभूमि को स्वर्ग से भी बड़ा बताया गया है – ***'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'।*** मेरे मन में अपनी जन्मभूमि भौंरी के प्रति बड़ा लगाव और सम्मान रहा है। सेवा काल में कई स्थानों पर रहा, पर गाँव कभी न भूला। एक—एक

पेड़–पौधा, चबूतरा, कुआँ, पहाड़, साथी, पर्व–त्यौहार सब याद आते रहे। आना–जाना भले कम हुआ हो, पर अन्तरात्मा में उसका स्थान अमिट बना रहा।

गाँव में परिवर्तन हुआ, विकास हुआ – उसे मैंने अपनी आँखों से देखा है। गांव के लिये कुछ करने की लालसा मन में सदैव बनी रही। कभी उससे उऋण नहीं हो सकता। संयोग की बात मार्च २००१ में गांव जाना हुआ। सोचकर गया था कि गाँव पर एक परिचयात्मक पुस्तक लिखना है। पांच–छः दिन वहाँ रहा। अपने पुराने मित्रों श्री महानन्द मिश्र (पूर्व प्रधान), श्री अम्बिका प्रसाद पाण्डेय, श्री चन्द्रशेखर त्रिपाठी, श्री शिवाकान्त त्रिपाठी आदि अनेक लोगों से चर्चा की। अभिन्न मित्र श्री शंकर लाल गौतम से तो कई बार बातें हो चुकी थीं। शैलचित्रों के बारे में प्रामाणिक रूप से तो किसी ने आश्वस्त नहीं किया। संयोग से गांव के ही पूर्व जनपद अध्यक्ष श्री बद्रीप्रसाद तिवारी से चर्चा हुई। उन्होंनें कहा कि काली पाथर के पास कुछ पुतरिया बनी हैं। यही नहीं, उन्होंने श्री चन्द्रशेखर त्रिपाठी के सुपुत्र चि. प्रमोद को बुलाकर उन चित्रों के फोटो लाने का भी निर्देश दिया। स्वयं अपने घर की खुदाई में १०–१५ फिट गहराई से प्राप्त पुराने मिट्टी के कुछ साँचे भी दिये जो यहाँ के किसी पुराने उद्योग के साक्षी हैं। गाँव के अन्य वरिष्ठजनों से भी सम्पर्क किया किन्तु यह आश्चर्य की बात रही कि शैलचित्रों की जानकारी एक–दो लोगों को ही थी। श्री महानन्द मिश्र ने भी कुछ चित्र अंकित होने की पुष्टि की थी। इस सबसे मेरा पुस्तक लिखने का संकल्प पक्का हुआ।

छतरपुर लौटकर मैने सर्वप्रथम पुरातत्त्व सर्वेक्षण के महानिदेशक (दिल्ली) को भौंरी के शैलचित्रों के बारे में पत्र लिखा और अखबारों में एक लेख भी प्रकाशित कराया जिसको समाचार के रूप में मेरे स्थानीय मित्र 'वार्ता' प्रतिनिधि श्री विनीत खरे ने 'वार्ता' समाचार एजेंसी के माध्यम से सारे देश में प्रसारित करवाया। इंटरनेट पर भी देखा गया। महानिदेशक के निर्देश पर पुरातत्त्व विशेषज्ञ श्री जे.पी. दुबे ने मुझसे भेंट की। गांव का सर्वे कर उन्होंने शैलचित्रों को प्रागैतिहासिक प्रमाणित किया तथा सूचना विभाग को रिपोर्ट भेजकर उन्हें सुरक्षित करने की अनुशंसा की। श्री दुबे को गाँव में अपेक्षित साधन और सुविधायें श्री चन्द्रशेखर त्रिपाठी व श्री बद्रीप्रसाद तिवारी ने उपलब्ध कराई थी। उम्मीद है कि हमारा गाँव शीघ्र ही देश के शैलचित्रों के नक्शें में आ जायेगा। महानिदेशक और श्री दुबे के पत्र कव्हर पृष्ठ २ व ३ पर दिये गये हैं।

पुस्तक लिखने में मैने अपने सहपाठी श्री चन्द्रशेखर त्रिपाठी के माध्यम से सभी का सहयोग लिया। त्रिपाठी जी ने सभी से लिखित जानकारी एकत्र कर मुझे भेजी। उनके सुपुत्र प्रमोद त्रिपाठी ने शैलचित्रों के साथ अन्य चित्र भी भेजे जो इस पुस्तक में दिये गये हैं। यह पुस्तक उसी संकलित जानकारी के आधार पर तैयार की गई है जो

मित्रों, जानकारों, वरिष्ठ नागरिकों और परम्पराओं से मिली। इतिहास ग्रंथों में इसके बारे में कुछ भी प्राप्त नहीं होता। केवल दीवान प्रतिपाल सिंह द्वारा लिखित 'बुन्देलखण्ड का इतिहास' नामक ग्रंथ में बांदा जिले के एक प्रमुख गांव के रूप में नामोल्लेख भर है। मैंने इस हेतु भरपूर प्रयास किया। पुस्तक का आलेख तैयार होने के बाद मैंने उसे पुनः त्रिपाठी जी के पास भेजा ताकि वे जानकार लोगों को दिखा सकें और कोई त्रुटि हो तो दूर की जा सके। त्रिपाठी जी ने उस दायित्व का पूरी जिम्मेदारी से निर्वाह किया। बल्कि उन लोगों से कुछ क्षुब्ध भी हुये जो किन्हीं कारणों से अपेक्षित सहयोग नहीं दे पाये। यह स्वाभाविक भी है। मैं त्रिपाठी जी को विशेष सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। उनके सहयोग से ही यह संभव हो सका।

पुस्तक छपवाने के पूर्व मैंने सम्पूर्ण आलेख चित्रकूट जनपद के जिलाधिकारी (कलेक्टर) श्री जगन्नाथ सिंह जी के पास अवलोकनार्थ तथा दो शब्द लिखने के अनुरोध के साथ अपने अनुज श्री कृष्णगोपाल गुप्ता एडवोकेट (कर्वी) के माध्यम से भेजा। श्री सिंह साहब ने प्रशासनिक कार्यों में व्यस्त रहते हुये भी आलेख को पढ़ा और संदेश के रूप में दो शब्द लिखकर पुस्तक को प्रामाणिकता प्रदान की। यही नहीं, उसकी प्रशंसा भी की। मैं उनकी इस उदारता और सदाशयता के लिये हृदय से कृतज्ञ हूँ। आशा करता हूँ कि वे चित्रकूट जनपद में बिखरी मूल्यवान पुरातात्त्विक सम्पदों को सुरक्षित करने के लिए प्रभावी कदम उठायेंगे। चित्रकूट और पाठा क्षेत्र इस दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। जिलाधिकारी महोदय से दो शब्द लिखवाने में सहयोग के लिये मैं कर्वी के श्री कृष्णगोपाल गुप्त, एडवोकेट व श्री पुरुषोत्तम दास पहारिया को धन्यवाद देता हूँ। छोटे भाई आत्माराम बरसैंया भी धन्यवाद के पात्र हैं। उन्होंने सामग्री भेजने तथा सम्पर्क सूत्र बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अंत में अपनी जन्म—भूमि व ग्रामवासियों को सादर प्रणाम व स्मरण करते हुए अपनी यह छोटी सी भेंट उन्हें सादर समर्पित करता हूँ। विश्वास करता हूं कि आने वाले साथी उसके प्रामाणिक इतिहास की और भी गहराई से छानबीन करेंगे तथा गांव के विकास में अपना योगदान करेंगे।

भौंरी मेरी मातृभूमि मैं वंदन करता हूं।
हर रज कण इसका पावन, माथे पर धरता हूँ।

—गंगा प्रसाद बरसैंया

/रीवा/स्था./50–99

दिनांक 1–6–2001

श्रीमान् अधीक्षण पुरातत्वविद महोदय,
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण,
भोपाल मण्डल, भोपाल

यः पत्र क्र. पी.नं. 17/30/84–एम 1505 भोपाल द्वारा प्रेषित दिनांक 17–5–2001 रीवा में प्राप्त दिनांक 23–5–2001 के विषय में शैल चित्रों की रिपोर्ट।

दरणीय महोदय,

संदर्भित विषय पर लेख है कि शैल चित्रों के खोजकर्ता डॉ. गंगा प्रसाद बरसैंया जी के पास जिला छतरपुर में सम्पर्क स्थापित कर शैल चित्र स्थल ग्राम भौंरी जिला चित्रकूट की वना निम्नानुसार है।

ग्राम भौंरी जिला चित्रकूट उ.प्र. के झांसी मिर्जापुर रोड पर चित्रकूट से लगभग 15 कि. की दूरी पर तथा झांसी मानिकपुर रेलवे लाइन पर कर्वी चित्रकूट धाम से 15 कि.मी. की दूरी स्थित है ग्राम भौंरी से पूर्व की ओर लगभग एक कि.मी. की दूरी पर गांव के तीन ओर पहाड़ी ड़ी है इसी पहाड़ी के पूर्वी दिशा की ओर लगभग 600 मीटर की ऊँचाई में बड़े पत्थरों की टानों पर शैल चित्र 2070, 1025, 025085045, 050070 के क्षेत्रफल में लाल गेरुए रंग में कित है इन प्रागैतिहासिक शैल चित्रों में मानवाकृतियां हांथों में औजार लिये हुये शिकारी नवरों पर सवार हैं जानवरों में हांथी, हिरण, बैल, बकरी, आदि के चित्र अंकित हैं शिकारी प में एक आदमी धनुष बाण संधान करते दिखाया गया है तथा छोटे बड़े मानवाकार से अन्य रह के चित्र भी अंकित हैं पुरातत्वीय सर्वेक्षण के पश्चात और भी शैलचित्रों के प्राप्त होने के सार हैं।

ग्राम भौंरी प्राचीन समय की बस्ती रही होगी वर्तमान निवासियों द्वारा घरों की नींव दने पर प्राप्त मिट्टी के कलाकृति पूर्ण सांचे के टुकड़े एवं अन्य प्राचीन अवशेष प्राप्त होते रहते हैं।

इस पहाड़ी पर वैध एवं अवैध रूप से पत्थर तोड़ने की खदाने लगी हुई हैं जिनको जला प्रशासन चित्रकूट ने 10 वर्ष के लिये लीज पर दे रखा है यदि इस ओर ध्यान न दिया या तो पुरातात्विक महत्व के शैल चित्रों एवं अन्य पुरा सामग्री समाप्त होने की आशंका है साथ वन सम्पदा का विनाश एवं पर्यावरण प्रदूषण की रक्षा नहीं हो पायेगी।

इस सम्बन्ध में नगर पंचायत अध्यक्ष श्री बद्री प्रसाद तिवारी से मिलकर सुरक्षात्मक कार्यवाही की गई एवं जिलाध्यक्ष स्टेशन बाहर होने के कारण सम्पर्क नहीं हो सका हैं इस सम्बन्ध में ग्राम भौरी एवं समीपी पुरावशेषों का पुरातात्विक सर्वेक्षण कराकर इसे संरक्षित किया जाकर पुरातात्विक धरोहर को पूरी तरह नष्ट होनेसे बचाये जाने सम्बन्धी कार्यवाही करने की कृपा करें, चाही गई सूचना श्रीमान् की सेवा में सादर सम्प्रेषित हैं।

भवदीय,

(जे.पी. दुबे)
फोरमैन
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, रीवा उप मण्डल

तिलिपि : डॉ.गंगा प्रसाद बरसैंया जी
चौबे कॉलोनी छतरपुर

परिचय

नाम : गंगा प्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

जन्मतिथि : 6 फरवरी 1937

शिक्षा : 1. कक्षा 8वीं तक ग्राम भौरी में
2. हा.स्कूल–इंटर, चित्रकूट इंटर कालेज, कर्वी
3. बी.ए., एम.ए., पी.एच–डी. जबलपुर विश्वविद्यालय

सेवा : म.प्र. के शासकीय महाविद्यालयों में व्याख्याता, प्राध्यापक, प्राचार्य
31–12–98 को सेवानिवृत्त

स्थायी निवास : एम.आई.जी.–12, चौबे कॉलोनी, छतरपुर (म.प्र.)☎:(07682) 41024

पुस्तकें : 1. हिन्दी साहित्य में निबंध और निबंधकार (शोधप्रबंध)
2. हिन्दी के प्रमुख एकांकी और एकांकीकार
3. छत्तीसगढ़ का साहित्य और उसके साहित्यकार
4. आधुनिक काव्य : संदर्भ और प्रकृति
5. रस विलास, 6. वीर विलास, 7. सुदामा चरित
8. चिन्तन–अनुचिन्तन, 9. बुन्देलखण्ड के अज्ञात रचनाकार (शोधग्रंथ)
10. अरमान वर पाने का (व्यंग्य)11. निंदक नियरे राखिये (व्यंग्य)
12. अथ काटना कुत्ते का भइया जी को (व्यंग्य)
13. तुलसी के तेवर, 14. कर्म और आराधना
15. रचना से रचना तक, 16. सृजन–विमर्श, 17. समवाय
18. नारी : एक अध्ययन
तथा अन्य

सम्मान पुरस्कार : 1. महामहिम राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा जी द्वारा 'साहित्य श्री'
2. अ.भा. भाषा साहित्य सम्मेलन द्वारा –साहित्य श्री
'भारतीय भाषा भूषण' से सम्मानित
3. नागरी प्रचारणी सभा कानपुर द्वारा – 'साहित्य भारती'
4. तुलसी सम्मान व विद्रोही पुरस्कार
5. अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित

संस्थाओं से सम्बद्ध : 1. अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय, रीवा के कला संकाय के डीन, हिन्दी बोर्ड के अध्यक्ष व कार्यपरिषद के सदस्य रहे
2. अनेक वि.वि. से संबद्ध रहे।
3. म.प्र. आंचलिक साहित्यकार परिषद के उपाध्यक्ष
4. कला संस्कृति परिषद छतरपुर के अध्यक्ष
5. अ.भा. भाषा साहित्य सम्मेलन, छतरपुर के अध्यक्ष आदि

———